

# पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

हमें आज इस बात को थोड़ा अच्छी तरह से समझ लेना है कि हमारे वैल्यूज, वर्च्यूज, हमारी क्लाविटी 'गुण' तथा पावर 'शक्तियों' में अन्तर क्या है तथा इनकी सही परख क्या है? इसको एक उदाहरण से अच्छी तरह समझा जा सकता है। आपने फिल्मों देखी होंगी, जिसमें कोई एक ऐसा चरित्र जो इन्स्पेक्टर की भूमिका में है, उसके अन्दर ईमानदारी का गुण भरा हुआ है। उसके इस गुण को नष्ट करने के लिए सभी तरह तरह के साधन अपनाते हैं कि इसको कुछ रिश्त दिया जाए। ताकि यह हमारा माल ना पकड़े। फिर भी वो नहीं टूटता तो उसको मारने के अलग अलग प्लैन्स बनाते हैं। अब यहां सोचना यह है कि एक साधारण सा इन्स्पेक्टर, उसे मारना क्या बड़ी बात है, लेकिन आसान क्यों नहीं लगा, क्योंकि उसके अंदर ईमानदारी का गुण अब शक्ति का रूप ले चुका है, इसलिए उसका रिफ्लेक्शन शक्तिशाली रूप से सबके सामने आ रहा है। आप यहां यह बात देखो कि व्यक्ति की शक्ति उसके गुणों की धारणा में है, और वही व्यक्ति महान है, वही धनवान भी है। लेकिन उस गुण को शक्ति जब तक हम नहीं बनाएंगे, तब तक हम मन से शक्तिशाली नहीं बन पायेंगे। इसको हम 'जा-पा-प्र-धा' शब्द से जोड़कर समझ सकते हैं। जैसे किसी भी चीज को 'जा' यानि जान लेना या जानना, उसे हम मूल्य कहते हैं। लेकिन उन्हीं मूल्यों को 'पा' अर्थात् प्राप्त करना, उस पर काम करना, उसे हम वर्च्यू कहते हैं तथा उसे सभी के सामने प्रकट करना, उसकी फ्रि क्वेंसी को बढ़ाना अर्थात् क्वालिटी को निखार ना तथा उसे अपने जीवन में सम्पूर्णतया धारण करना अर्थात् गुण को शक्ति का रूप ले लेता है।

## शक्ति व गुण, दोनों की परख



तथा उसके आधार से परिवर्तन स्थायी होता है। हो सकता है कि हम कुछ उससे अलग करना चाहें, लेकिन होगा वह गुण, शक्ति के आधार से ही। विडम्बना यह है कि प्रयोग करते तो हैं, पर

## सफलता परसेंटेज में क्यों?

को धारण शक्ति का रूप

यही शक्ति हमें विशेष बना देती है।

इसलिए शायद हम बीच-बीच में गुणों की धारणा करते करते दुनिया के प्रभाव में आकर सब कुछ तोड़ते रहते हैं, नियम मर्यादाओं पर चल नहीं पाते। और बार बार यह कहकर तसल्ली देते हैं कि इस बार हम कर लेते हैं, अगली बार से देखा जायेगा। आप बताइये हर बार गुणों को अर्थात् ईमानदारी को किसी अपने के लिए अर्थात् मोहवश छोड़ देना, ये हमेशा के लिए छोड़ने का अनुभव अवगुण भी तो बना रहा है। यही बनते बनते हमारे संस्कारों में आ जाता है। इसलिए आज हम अवगुणी होने के कारण ही शक्तिहीन हैं। शक्तिहीन अर्थात् थोड़ी थोड़ी बात पर दुनिया के लोगों का झंझा देना, लोग हैं ही ऐसे। उनके बीच में रहकर हमें ऐसा रहना तो बड़ा मुश्किल है। मुश्किल तो है, वो तो उस समय लगता है कि मुश्किल है, लेकिन जो आपके ऊपर प्रभाव पड़ा, संस्कार बने, उसका क्या? बस आप यही सोचकर, कृपया यह धारणाएं ना तोड़ें। शक्तिशाली वही है, जो खुद से वफादार है कि क्या मैं सही हूँ, या लालच वश सब कुछ छोड़ देता हूँ। आपके मन की शक्तियाँ गुणों के आधार से काम करती हैं, सत्यता के आधार से चलती हैं, ना कि अवगुणों के आधार से। इसलिए आज इतना क्राइम बढ़ गया है, बाद में पछताते हैं कि, अरे ना करता तो। अरे, यह तो तभी सम्भव है जब हम गुणों को शक्ति बनायेंगे।



हम देखते हैं प्रकार फैवटी रॉ-मटीरियल डाला वैसी ही गुणवत्ता युक्त होता है। हमने इस दो हज़ार

कि जिस में जैसा जाता है, प्रोडक्ट तैयार

हैप्पी न्यू ईयर, हैप्पी दिवाली, नया साल मुबारक कहा और अपने तथा दूसरों के लिए शुभकामनायें दी थी, ली भी और करी भी। अब देखना है कि साल भर हमने उसे कितना निभाया और कितना बढ़ाया, हमने अच्छे संकल्प कर मनाया और साल भर उन्हीं संकल्पों से हमारे जीवन रूपी फैवटी में कैसा माल तैयार हुआ? जैसा संकल्प का भोजन हमने साल भर दिया होगा, वैसी ही तो प्रोडक्ट के रूप में सूरत तैयार हुई होगी। तो आइये हम इसपर थोड़ा विचार करते हैं...

इस वर्ष में कितने सुनहरे सपनों के रंग भरे या कितने कहां खड्डे में गिरे या स्वयं में कितने दाग जड़े? क्योंकि अभी एक मास दीपावली का शेष है, और दो मास नये साल को शेष है। क्योंकि अभी हम आंकलन करेंगे तो देख पायेंगे कि हमारी दो हज़ार अठारह की यात्रा किस तरफ चली थी और अब कहां पहुंची है। अगर सही दिशा में, सही गति से उस तरफ बढ़ रहे हैं, तब तो ठीक है, अन्यथा हमारे पास अभी भी वक्त है सम्भलने का। इसलिए हम आपसे ये बात कह रहे हैं कि कहीं चलते चलते राह में आई किन्हीं मुश्किलताओं, कठिनाइयों या बाधाओं ने हमारी दिशा ही परिवर्तित तो नहीं कर दी! जैसे कोई स्टूडेंट साल भर पढ़ाई करता है और परीक्षा के पूर्व अपने आप से बैठकर चेक करता है कि मेरी तैयारियाँ पूरी हो गई हैं या नहीं। ठीक उसी तरह उसी अंदाज़ में हम भी वैसे ही इस वर्ष को देखें, ये कैसा रहा, उसका आंकलन करने का समय हमारे पास है। आंकलन करने पर हमें पता चलेगा कि हम कहां पहुंचे हैं और हमें कहां पहुंचना है, इसका अंतर हमें मालूम पड़ेगा। तो अंतर को आत्मसात कर दूरी कम कर पायेंगे।

आइये हम इस वर्ष को कसौटी की इन बिन्दुओं पर देखें और परखें...

» सबसे पहले मेरा ये साल संतोषजनक रहा? मैं इस साल के समय को सफल कर संतुष्ट हूँ? या इसमें कोई किन्तु परन्तु का भाव मन में उठता है?

» मैंने जो लक्ष्य बनाया था, और जहां पहुंचना था, जिस गति से पहुंचना था, वो बराबर चल रही है या इसमें स्पीड को बढ़ानी है या दिशा ठीक करनी है?

» समय का इंतज़ार या समय का इंतज़ाम? बरसात आने पर ही तालाब पर बांध बनाना शुरू करेंगे या बारिश से पहले कर लिया है?

» परमात्म शक्ति के साथ का फायदा इस वर्ष मैंने उठाया या इस अमूल्य अवसर को यूँ ही साधारणता में समाप्त कर दिया!

» अपने आप से बैठकर वार्तालाप करें, संवाद करें, तो पता चलेगा कि मैं कहां हूँ। सचमुच दुनिया के आकर्षण, दुनिया के प्रलोभन के भंवर में मैं कहीं खो तो नहीं गया हूँ?

» घबराइये मत, अभी भी वक्त है। एक मास अपने पास है। तीव्र गति से अपने आप को संयमित कर नियमबद्ध बन, योजनाबद्ध होकर अपने संकल्प को सिद्धि की ओर ले जायें।

» आंकलन करने पर यदि आप पाते हो कि देर हो गई है, तब भी नाउम्मीद न बनें। अगर आप चाहते हैं तो उस दिशा में कार्य करने लग जायें जहां आप पहुंचना चाहते हैं और जिसे पाना चाहते हैं।

अगर आप इस कसौटी पर स्वयं को कसकर देखते हैं तो आप अपने जीवन से जुड़े हर प्रश्नों का हल पा लेंगे और हुई क्षति की क्षतिपूर्ति कर पायेंगे। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपके सपने आपके अपने बन जायेंगे। आपमें वो जज्बा भी पैदा होगा कि मैं कर सकता हूँ और मैं कर ही लूंगा, क्योंकि अब मेरा लक्ष्य भी स्पष्ट है, गति भी तेज़ है और योजना के अनुरूप कार्य भी है।



वीकानेर-राज.। केन्द्रीय जल संसाधन गंगा विकास संसदीय कार्यमंत्री अर्जुन राम मेघवाल को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड देते हुए ब्र.कु. कमल तथा अन्य।



कूच विहार-प.बंगाल। सांसद पार्थ प्रतिम राय को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु. सम्पा।



देवरिया-उ.प्र.। जिलाधिकारी अमित किशोर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. अनिता, ब्र.कु. रीता तथा अन्य।



मीरगंज-बिहार। नगर निगम के उपाध्यक्ष धनंजय कुमार यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता।

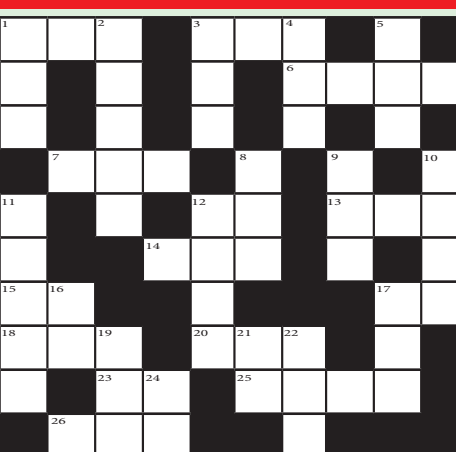


देवबंद-गुजरावाड़ा(उ.प्र.)। एल.आई.यू. के अधिकारी भारत भूषण जो को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुधा।



दिल्ली-ओम विहार। तिहार जेल में रक्षाबंधन कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. विमला। साथ हैं सुपरिन्टेंडेंट राजेश चौहान तथा अन्य।

## ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहली-1 (2018-2019)



## ऊपर से नीचे

- सगा, बाप की आज्ञा को मानने वाला (3)
- धामा खाने वाला ब्राह्मण (5)
- पक्षी, गौरैया (3)
- मान, इज्जत, महिमा (3)
- झूठ, तुम्हें कभी... नहीं बोलना है (3)
- तिराहा, अभी तुम... पर खड़े हो (3)
- निवास करना, ठहरना (3)
- ज्ञान की....बन सदा टिकलू टिकलू करते

## रहना है (4)

- नश्वर, यह जीवन ...है (5)
- दिलबर, हमसफर, साथी (4)
- कंठ, ग्रीवा, गर्दन (2)
- यही...है दुनिया को भूल जाने की, मौसम (3)
- खुशबू, सुगन्ध (3)
- मित्र, सखा, दोस्त (2)
- अनुकृति, प्रतिलिपि, ज्यों का त्यों (3)
- आज नहीं तो... बिखरेंगे यह बादल (2)

## बायें से दायें

- स्वामी, बालक सो.... (3)
- दीपक, दीया, दीप (3)
- जागीर, राज्य (4)
- घृणित, मलिन, एक सम्प्रदाय (3)
- वायु, बयार, समीर (2)
- सहज, सीधा, सामान्य (3)
- रोटी बनाने का एक साधन, धातु का दो पाल

## वाला यंत्र (3)

- खंडित होना, विघटन, टूटना (2)
- ताकत, शक्ति (2)
- दास, नौकर, चाकर (3)
- धरती, धरा, धरनी (3)
- अधिकार, स्वामित्व (2)
- .....जगाकर आई हूँ, भाग्य (4)
- सम्पूर्ण, सारा, पूरा (3)